आई.एच.बी.टी. संवाद

वर्ष 2 अप्रैल–जून 2010 अंक 5

आई.एच.बी.टी. स्थापना दिवस

संस्थान ने अपना स्थापना दिवस 7 जून 2010 को मनाया। संस्थान के निदेशक डॉ परमवीर सिंह आहूजा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होने बताया कि संस्थान जलवायु परिवर्तन का पादप संपदा पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने के लिए शोध कर रहा है। इसके लिए संस्थान ने हिमालय क्षेत्रों में विभिन्न प्रक्षेत्र स्थापित किए हैं। संस्थान ने स्टीविया की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए गुडगांव में एक कम्पनी से एक प्लांट स्थापित करने के लिए समझौता किया है। सी.एस.आई.आर. के ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्थान 17 परियोजनाओं का संचालन कर रहा है। संस्थान सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में टिश्यू कल्चर इकाइयों को स्थापित कराने में

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर–हिमाचल प्रदेश

प्रौद्योगिकी उपलब्ध करा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्थान की विशेषज्ञता को प्रसारित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत इथोपिया में चाय तथा औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती की तकनीक पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। संस्थान ने इस वर्ष अपने आधारभूत डांचे को मजबूज किया है।

जिनोमिकी एवं समवेत जीवविज्ञान संस्थान (आई.जी.आई.बी.) के निदेशक डा. राजेश गोखले ने "वैश्विक समस्याओं के निदान में जिनोमिक्स की भूमिका "विषय पर स्थापना दिवस संभाषण दिया। समारोह की अध्यक्षता आई.आई.टी. खड़गपुर के पूर्व निदेशक प्रो. के. एल. चोपड़ा ने की। अपने संबोधन में डा. चोपड़ा ने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि इसे आगे बढ़ाने के लिए संस्थान तेज गति से प्रयत्न करेगा।

इस सुअवसर पर संस्थान के वर्ष2009-2010 के वार्षिक प्रतिवेदन का विमाचन भी किया गया।

इस समारोह में संस्थान के स्टाफ के अतिरिक्त स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, आई.वी.आर.आई. एवं अन्य विभागों के अधिकारियों, पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भाग लिया।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के कुलपति का आई.एच.बी.टी. में संभाषण

जाने-माने शिक्षाविद् एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात प्रो. अजायब सिंह बराड़, कुलपति, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ने दिनांक 9.4.2010 आई.एच.बी.टी. का एकदिवसीय दौरा किया। इस दौरान उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों ,शोध छात्रों को "एनएमआर द्वारा पॉलीमर के नये आयामों और संरचना निर्धारण " विषय पर संभाषण दिया।

डॉ. बराड़ को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

इस समारोह की अध्यक्षता योजना आयोग,

भारत सरकार के पूर्व सदस्य प्रो. वी. एल. चोपड़ा ने की।

संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने अपने स्वागत संबोधन में संस्थान और गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के संयुक्त शोध की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रकाशन हुए, मानव संसाधन विकास हुआ।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

संस्थान में 11 मई 2010 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर सी.एल. खेतरपाल, निदेशक सेंटर ऑफ बायोमेडिकल मैग्नेटिक रेज़ोनेस, लखनऊ ने "अन्तर्विषयी अनुसंधान की शताब्दी "विषय पर अभिभाषण दिया। अपने संबोधन में उन्होनें बताया कि आज का युग एक से अधिक विषयों के तालमेल द्वारा अनुसंधान करने का है ताकि इस शोध से मानव की विकास संबन्धी गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव पडे। विशेषकर विज्ञान की विविध विधाओं का एक दूसरे पर आधारित होने के कारण ही आज विकास में गति आई है। हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए इनकी उत्पादकता को बनाए रखना होगा।

समारोह की अध्यक्षता लखनऊ स्थित बायोटेक पार्क, भारत सरकार के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आई.आई.टी.आर. के पूर्व निदेशक एवं देश के प्रतिष्ठित विषविज्ञान विशेषज्ञ डा. प्रहलाद किशोर सेठ ने की। अपने संबोधन में उन्होनें संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि इसे आगे बढ़ाने के लिए संस्थान तेज गति से प्रयत्न करेगा।

इससे पूर्व अपने स्वागत भाषण में संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व के बारे में बताते हुए विज्ञान के क्षेत्र में अपार संभावनाओं पर चर्चा की। आई.एच.बी.टी. के लक्ष्य के बारे में बताते हुए कहा कि संस्थान किसानों एवं उद्यमियों के लाभ के लिए प्रति इकाई जैव संसधानों के उत्पादन को बढ़ाने एवं क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नरत है। उन्होने संस्थान की अन्य गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

इस समारोह में संस्थान के स्टाफ के अतिरिक्त स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, आई.वी.आर.आई., आई.जी.एफ.आर.आई. एवं अन्य विभागों के अधिकारियों, पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भाग लिया।

Research Papers

Anuradha N, Rana T, Kumar Y, Raja Ram, Hallan V and Zaidi AA (2010) Analysis of the Coat Protein Gene of Indian Strain of Apple Stem grooving virus. *Journal of Plant Biochemistry and Biotechnology* 19(1): 91-94.

Bhandari P, Kumar N, Singh B and Ahuja PS (2010) Online HPLC-DPPH method for antioxidant activity of *Picrorhiza kurroa* Royle ex Benth. and characterization of kutkoside by Ultra-Performance LC-electrospray ionization quadrupole time-of-flight mass spectrometry. *Indian Journal of Experimental Biology* 48: 323 -328.

Chandel V, Singh MK, Hallan V and Zaidi AA (2010) Evidence for the occurrence of a distinct potyvirus on naturally growing *Narcissus tazetta*. *Archieves of Phytopathology and Plant Protection* 43(3): 209-214.

Hossain MM, Sharma M and Pathak P (2009) Cost effective protocol for *in vitro* mass propagation of *Cymbidium aloifolium* (L.) Sw.- a medicinally important orchid. *Engineering in Life Sciences* 9(1): 1-10.

Hossain MM, Sharma M and Pathak P (2009) *In vitro* mass propagation of an economically important orchid, *Cymbidium aloifolium* (L.) Sw. *Journal of the Orchid Society of India* 22(1-2): 91-95.

Jaitak V, Sharma K, Kalpana K, Singh HP, Singh B and Kaul VK (2010) Antioxidant activity of *Potentilla fulgens*: An alpine plant of western Himalaya. *Journal of Food Composition and analysis*. 23: 142-147

Kamunya SM, Wachira FN, Pathak RS, Muoki RC, Wanyoko JK, Ronno WK and Sharma RK (2009) Quantitative genetic parameters in tea (*Camellia sinensis* (L.) O. Kuntze): I. combin-

ing abilities for yield, drought tolerance and quality traits. *African Journal of Plant Science* 3 (5): 93-101.

Kasana Ramesh Chand (2010) Proteases from Psychrotrophs: An Overview. *Critical Reviews in Microbiology*, 36 (2): 134-145.

Kumar Y, Hallan V and Zaidi AA (2009) Identification and characterization of *Bean yellow mosaic virus* infecting freesia. *Journal of Plant Biochemistry & Biotechnology* 18: 253-255.

Kumari A, Yadav SK and Yadav SC (2010) Biodegradable polymeric nanoparticles based drug delivery systems. *Colloid and Surface Chemistry B: Biointerfaces* 75(1): 1-18.

Kunde NP, Jaitak V, Kaul VK and Sharma OP (2010) Composition and antibacterial activity of essential oils of *Lantana camara, Ageratum houstorianum* and *Eupatorium aderophorum*. *Pharmaceutical Biology*, 48(5): 539-544.

Malik S, Sharma S, Sharma M and Ahuja PS (2010) Direct shoot regeneration from intact leaves of *Arnebia euchroma* (Royle) Johnston using thidiazuron. *Cell Biology International* 34 (5): 537-542.

Mohanpuria Prashant; Kumar Vinay; Yadav Sudesh Kumar(2010) Tea caffeine: Metabolism, functions, and reduction strategies. *Food Science and Biotechnology*, 19 (2): 275-287.

Sahoo Artabandhu, Ogra Ram K., Sood Anil and Ahuja Paramvir Singh(2010) Nutritional evaluation of bamboo cultivars in sub-Himalayan region of India by chemical composition and in vitro ruminal fermentation. *Grassland Science*, 56 (2): 116-125

Saini Rikki, Guleria Shailja, Kaul Vijay K., Lal Brij, Babu Garikapati D. Kiran and Singh Bikram (2010) Comparison of the Volatile Constituents of Elsholtzia fruiticosa Extracted by Hydrodistillation, Supercritical Fluid Extraction and Head Space Analysis. *Natural Product Communications*, 5 (4): 641-644 APR 2010

Salwan R, Gulati A and Kasana RC (2010) Phylogenetic diversity of alkaline protease-producing psychrotrophic bacteria from glacier and cold environments of Lahaul and Spiti, India. *Journal of Basic Microbiology* 50: 150-159.

Sapra S, Nepali K, Kumar R, Goyal R, Suri OP, Kaul VK and Dhar KL (2010) Analysis of Mentha waste products using GCMS. *International Journal of Pharmaceutical Science and Research* 1(4): 53-55.

Shanmugam V, Singh NA, Raja Ram and Dhyani D (2009) Screening carnation and gladiolus cultivars for vascular wilt resistance. *Indian Phytopathology* 62(1): 117-118.

राष्ट्रीय गोष्ठी

संस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सी.एस.आई.आर. प्रौद्योगिकी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय गोष्ठी का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. परमवीर सिंह आहूजा ने डॉ. पी.जी. राव, निदेशक उत्तर पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहट एवं डॉ. ए. के. कुंडलिया,

सी.एस.आई.आर. प्रतिनिधि की उपस्थिति में किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए डॉ. ए. के. कुंडलिया, सी.एस.आई.आर. प्रतिनिधि ने "सी.एस.आई.आर 800'' कार्यक्रम पर महानिदेशक के संदेश के बारे में बताया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के बारे में संक्षिप्त में बताया। आगे प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि भारत की 80 करोड़ आम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए सी.एस.आई.आर. ने इस ग्रामीण विकास कार्यक्रम की शुरुआत की है। कार्यक्रम के क्लस्टर निदेशक डॉ. पी.जी. राव ने कहा कि सी.एस.आई.आर. के विशिष्ट प्रौद्योगिकी को लाभार्थियों तक पहुंचाने की आवश्यकता है तथा सभी संस्थानों को ग्रामीण भारत के समुदायों के उत्थान के लिए अपने साधनों का इष्टतम उपयोग करना चाहिए। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों में स्थित सी.एस.आई.आर. के 17संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लियात तथा जो अपने-अपने संस्थानों द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी।

पुरस्कार

डॉ. मधु शर्मा को 7 जून 2010 को ऑर्किड सोसाइटी से वानस्पतिक विज्ञान, भारतीय ऑर्किड के प्रवर्धन और संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय जीनोम अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में मान्यता प्रदान करके सम्मानित किया गया।

डॉ. सुदेश कुमार को जैविक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के योगदान के लिए सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए चुना गया है।

दूरदर्शन शिमला से कृषि दर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत वार्ता

डॉ. मारकंडेय सिंह, वैज्ञानिक ने दिनांक 15.04.2010 को लिलियम कर्तित पुष्प की खेती और फसलोपरांत तकनीक पर वार्ता की।

डॉ. वीरेन्द्र सिंह एवं डॉ. आर. के. सूद, वैज्ञानिकों ने दिनांक 18.05.2010 को हिमालय क्षेत्र में कुटकी (*पिक्रोराइजा कुरुआ*) की खेती पर वार्ता की।

डॉ. अनिल सूद एवं डॉ. आर. के. सूद, वैज्ञानिकों ने बांस के जीवनकाल को बढ़ाने के लिए रासायनिक उपचार पर वार्ता की।

प्रशिक्षण

श्री दिदार सिंह, वरि. आशुलिपिक ने राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद्, कानपुर द्वारा मसूरी में 'भविष्य के लिए कार्यालयी स्टाफ' विषय पर आयोजित आवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया तथा श्री सिंह ने 9 जून को संस्थान में उसी विषय पर संभाषण भी दिया।

श्री राजेश कुमार, अनुभाग अधिकारी (सा.), श्री विक्रांत गौतम, तकनीकी अधिकारी एवं श्री जसबीर सिंह, तकनीकी सहायक ने एन. आई.ओ., गोआ में 'सी.एस.आई.आर. रुपान्तरण, मानव संसाधन पहल' विषय पर आयोजित गोआ संवाद में प्रतिभागिता की।

प्रशिक्षण / कार्यशाला आयोजित

संस्थान में 13 मई 2010 को 'भविष्य में पुष्प खेती' विषय पर विचार विमर्श, आयोजित किया

तथा इसमें 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

'बायोइन्फोरमेटिक फॉर नेस्ट जनरेशन क्वेसिंग' विषय पर 17-18 जून को कार्यशाला आयोजित की गई तथा इसमें 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आमंत्रित व्याख्यान

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के कुलपति डॉ. अजायब सिंह बराड़ ने 9 अप्रैल 2010 को संस्थान में संभाषण दिया।

कनाडा से आए डॉ. अंकित वालिया ने 19 अप्रैल 2010 को 'प्रोटीन जीन रेगुलेशन' विषय पर संभाषण दिया।

डॉ. अरविन्द मित्रा, कार्यकारी निदेशक, भारत-अमेरिका विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंच ने दिनांक 7 मई 2010 को 'भारत-अमेरिका विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग : संभावनाएं' विषय पर संभाषण दिया।

डॉ. गणेश वागलेर, मेक्स-पलेन्कस इन्स्टिट्यूट फॉर मालिक्यूलर जेनेटिक्स ने 18 मई 2010 को संभाषण दिया।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारीज़ विश्वविद्यालय, पालमपुर के प्रतिनिधि ने 22 मई 2010 को संभाषण दिया।

प्रो. दया सिंह संधु, फुलब्राइट-नेहरू सीनियर स्कॉलर ने 2 जून 2010 को मानसिक स्वास्थ्य पर संभाषण दिया।

डॉ. बलराम सिंह, निदेशक, बोटुलिनम अनुसंधान केन्द्र, मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय, डार्टमाउथ ने 7 जून 2010 को **"Botulinum Neurotoxin vs. Neuromedicine - basic and applied research"** विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रो जीन केलरहॉफ, एसोसिएट प्रोफेसर , पादप जैव प्रौद्योगिकी और पर्यावरण विज्ञान ,फ्रांस ने 8 जून 2010 को **"Approaches Towards Sus-**

tainability" विषय पर संभाषण दिया।

डॉ. पी. एस. आहूजा, निदेशक ने प्रो. जीन केलरहॉफ को संस्थान के प्रयोगशाला उत्पाद भेंट किया।

विदेश यात्रा

डा. राकेश कुमार, वैज्ञानिक ने 12 अप्रैल से 14 अप्रैल 2010 को जर्मनी की यात्रा 7th BIOMET Conference in Albert-LUDWIGS-University of Freiburg, Germany में भाग लेने के लिये की।

डॉ. पी. एस. आहूजा, निदेशक एवं डॉ. राम कुमार शर्मा, वैज्ञानिक ने 13-14 मई 2010 को चीन की यात्रा International Conference on progress of "1000 Plant Animal Reference Genomes Project" and 2010 International Symposium on Tea (*Camellia sinensis)* Genome में भाग लेने के उद्देश्य से की।

डॉ. मारकन्डेय सिंह, वैज्ञानिक एवं श्री सुखजिन्द्र सिंह, तकनीकी अधिकारी ने दिनांक 31 मई से 4 जून 2010 को ताइवान की Exposure visit to scientific labs/institutions in Taiwan under "National Programme for Training of Scientists and Technologists working in Govt. sector" की।

रजत जयंती व्याख्यान

डॉ. वीरेन्द्र सिंह 23 अप्रैल 2010

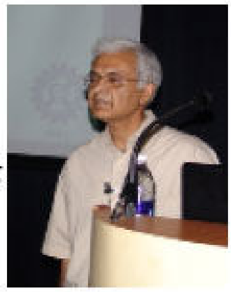

डॉ. संजय कुमार 10 मई 2010

शैक्षणिक भ्रमण

संस्थान ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित 'तकनीकी एवं नवोन्मेष प्रबन्धन केन्द्र' के रूप में दिनांक 28 जून से 1 जुलाई तक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खलेट और सरदार शोभा सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अन्द्रेटा के 30 विद्यार्थियों को पुष्पा

गुजराल सांइस सिटी, कपूरथला और औद्योगिक क्षेत्र बद्दी का शैक्षणिक भ्रमण कराया।

मोबाईल सगन्ध तेल आसवन उपकरण

अब तक वनों से प्राप्त बहुत से सगन्ध पौधों की किसानों द्वारा व्यावसायिक स्तर पर खेती की शुरुआत हो चुकी है। इससे यह कृषकों के लिए अतिरिक्त आय के साथ–साथ सगन्ध तेल उद्योगों के लिए कच्चे माल आपूर्ति का आधार बन रहा है। सगन्ध तेल उद्योग को स्थापित करने के लिए पादप सामग्री और आसवन सुविधाओं की आवश्यकता पड़ती है। सगन्ध तेलों के निष्कर्षण हेतु विशेषकर आसवन संयत्र की आवश्यकता होती है।

सगन्ध तेल इत्र, सौन्दर्य प्रसाधन, औषधियों और एरोमाथेरेपी (गंधायुर्वेद) में प्रयुक्त होते हैं। विश्व भर में इनका लघु और बड़े पैमाने की इकाइयों में आसवन किया जाता है। सगन्ध तेल आसवन इकाई को स्थापित करने के लिए भारी पूंजी लगती है, और प्रारम्भ में लघु किसान व उत्पादक इसे वहन नहीं कर पाते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस संस्थान ने विभिन्न स्तर पर प्रयुक्त होने वाले सगंध तेल आसवन यंत्र विकसित किए हैं। इसी श्रृंखला में संस्थान ने एक मोबाइल सगंध तेल आसवन उपकरण को विकसित कर निर्माण कराया है। यह सयंत्र 2 क्विंटल प्रति बैच क्षमता का है और ट्रक पर स्थापित है। सड़क सुविधा होने पर उपकरण को गावों और किसानों के खेतों तक पहुंचाया जा सकता है।

जिन कृषकों ने व्यावसायिक रुप से सगन्ध तेलयुक्त पौधों की खेती की शुरुआत की हो, और अभी तक अपना कोई आसवन यंत्र नहीं लगाया है वे कृषक हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर (हि.प्र.) द्वारा निर्मित मोबाईल सगन्ध तेल आसवन उपकरण का लाभ उठा सकते हैं। सरकारी व गैरसरकारी संस्थाएं, किसानों एवं सगंध तेल, लघु उत्पादकों को प्रशिक्षण दिलाने हेतु भी इस मोबाईल सगंध तेल आसवन उपकरण की मांग कर सकते हैं। यह संस्थान इस उपकरण की उपलब्धता निर्धारित शर्तों के आधार पर ही करायेगा। अन्य शर्तों के अतिरिक्त एक किसान या अन्य उपभोक्ता के पास न्यूनतम आवश्यक मात्रा में आसवन हेतु

संस्थान की जैवसंपदा

वन ककड़ी (पोडोफाइलम हेक्सेण्ड्रम)
Podophyllum hexandrum

यह पौधा पोडोफाइलेसी कुल का एक बहुवर्षजीवी पौधा है जो हिमालय की भीतरी पर्वत श्रेणियों में पाया जाता है। यह पौधा हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं में समुद्र तल से 2600 से 4500 मीटर की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। कश्मीर में यह पौधा लगभग 1800 मीटर की नीची सतह तक उतर आता हे। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा रोहडू, कुल्लू, कांगड़ा, चम्बा, निचार व लाहौल –स्पीति के वन क्षेत्रों में अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

विविध नाम:

हिन्दी	: वन ककड़ी, बन काकड़ू, बन ककड़ी
नेपाली	: मधु कानगी
अंग्रेजी	: Indian mayapple
भूटान	: इमा सिस
संस्कृत	: गिरिपर्पट, सिख पट, बकराचमका

जलवायु : वन ककडी शीत जलवायु वाला पौधा है तथा वहीं पर अच्छी तरह से उगाया जा सकता है जहाँ अत्याधिक सर्दी हो और गर्मियों में भी ठण्डक रहे।

उपयोग : वन ककड़ी की जड़ जिगर की क्रिया को उद्‌दीप्त करती है, पित्तसारक और विरेचक है। इसके प्रयोग से आंतों में मरोड़ व ऐठन होती है तथा पीले रंग के दस्त होते हैं जिससे पित्त का निस्सरण होता है तथा जिगर की सूजन उतरती है। वन ककडी की जडों का प्रयोग आमाशय व आंतों के कैंसर के इलाज में होता है, तथा पेट के कीड़ों की रोकथाम के लिए किया जाता है। ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों के लोग इसके फलों का प्रयोग याकों के प्रसव को शीध्र व सु खकर बनाने के लिए करते हैं।

इस पौधे की भारत में व बाहर के देशों में मांग काफी बढी हैं। माँग की पूर्ति पर्वतीय क्षेत्रों से अंधा–धुंध दोहन द्वारा की गई। परिणामस्वरूप यह पौधा लुप्त होने के कगार पर पहुंच चुका है। इसलिए इस पौधे के संरक्षण एवं प्रवर्धन की अति आवश्यकता है। इस तथ्य को देखते हुए भारत सरकार ने वन ककड़ी के व्यापार/निर्यात पर प्रतिबंध लगाया हुआ है तथा केवल खेती करके पैदा किए हुए पौधों का ही व्यापार/निर्यात किया जा सकता है।

प्रकाशक: डा. परमवीर सिंह आहूजा
निदेशक
आई.एच.बी.टी., पालमपुर
दूरभाष: 01894–230411 फैक्स: 01894–230433
E-mail : director@ihbt.res.in
Website : http://www.ihbt.res.in

संकलन एवं संपादन :
डा. आर. डी. सिंह, विज्ञानी
श्री मुखत्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी एवं
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक